अमेरिकी सीख रहे हैं भारतीय भाषाएं

रमेश जैन

किसी और की भाषा सीखना सद्भावना प्रदर्शन है। अभिरूचि का प्रदर्शन है,'' ये शब्द राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने जनवरी में राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा पहल के शुभारंभ के अवसर पर कहे। उन्होंने कहा, ''किसी व्यक्ति के साथ अंतरंगता के लिए यह बुनियादी जरूरत है और इसका मतलब है ''मुझे आपकी चिंता है। यों समझ लीजिए मैं केवल यह नहीं जानना चाहता कि आप कैसे बोलते हैं बल्कि यह भी जानना चाहता हूं कि आप जीवन को कैसे जीते हैं।''

अमेरिकी सरकार चाहती है कि उसके नागरिक भारत में बंगाली, पंजाबी और उर्दू भाषी लोगों को जानें और समझें। इसलिए 39 अमेरिकी नागरिकों ने विदेश विभाग पायलट कार्यक्रम द्वारा वित्त पोषित क्रिटिकल लैंग्वेज स्कॉलरशिप का पूरा लाभ उठाया है। इसके अंतर्गत इस बार गर्मियों में उन्हें स्थानीय भाषा समुदायों के बीच 10 सप्ताह तक रहने का सुअवसर मिलेगा। वे भारतीय परिवारों के साथ भी रहेंगे और उनकी भाषा को बोलना, पढ़ना, लिखना, समझना सीखेंगे। उनमें कुछ अन्य कार्यक्रमों के तहत भारत आए हुए 51 युवा अमेरिकी नागरिक भी शामिल होंगे जिनकी मेजबानी और मार्गदर्शन गुड़गांव स्थित, 'अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज' की ओर से किया जाएगा। इस इंस्टीट्यूट की सहायता वे 50 से अधिक अमेरिकी विश्वविद्यालय कर रहे हैं जिनमें भारत संबंधी अध्ययन की सुविधा है।

नब्बे अमेरिकी छात्र अपने कॅरिअर तथा व्यवसाय में अपने भाषा कौशल का प्रयोग करने की बात सोच रहे हैं। स्मिथ कालेज, मैसाच्युसेट्स में मानव अध्ययन विज्ञान की पूर्व स्नातक कोल एच. टेलर हिंदी सीख रही हैं जिसका उपयोग वे मानव अधिकार क्षेत्र में करेंगी। वह कहती हैं, ''सच यह है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अंग्रेजी तो बोलते नहीं। इसलिए अगर मैं तमाम लोगों से बातचीत करना चाहती हूं तो हिंदी ही काम आएगी। आप जिन लोगों के बीच काम कर रहे हैं अगर उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं जानते तो उनकी जिज्ञासाओं का पूरी तरह समाधान भी नहीं कर सकते।''

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सांटा बार्बरा में धार्मिक अध्ययन में स्नातक कैरी सी. सैन शिरिको का कहना है, ''इस स्कॉलरशिप से मेरी हिंदी में काफी सुधार हो सकेगा। मैं मानव जाति अध्ययन में पीएच.डी. कर रही हूं। मूल दस्तावेजों को मैं हिंदी में पढ़ सकती हूं। लोगों के साथ सीधे विचार-विमर्श कर सकती हूं। स्थानीय लोगों के इंटरव्यू ले सकती हूं। इससे मुझे नई संस्कृतियों के बारे में सीखने में मदद मिलेगी।''

कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में दक्षिण एशियाई अध्ययन में स्नातक कोलीन ई.केली ने भी इसी तरह के विचार जताए। वह कहती हैं, ''मैं लखनऊ के आसपास के उर्दू भाषी समाज पर अनुसंधान कर रही हूं। इसलिए उर्दू सीख कर इतिहास में मेरा अनुसंधान कार्य पूरा हो सकेगा। इस स्कॉलरशिप से मेरी उर्दू की पढ़ाई का खर्चा पूरा होगा। इन कक्षाओं में पढ़ने के लिए मुझे कोई और खर्चा नहीं करना पड़ेगा। मेरे रहने, खाने और यात्रा आदि का व्यय भी इसी में शामिल है।''

रमेश जैन

विदेश विभाग की मैरिएन क्रेवन नई दिल्ली में भाषा छात्रवृत्तियां प्रदान करते हुए।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज की महानिदेशक पूर्णिमा मेहता कहती हैं, ''भाषा कार्यक्रम सहयोग का वातावरण तैयार करता है जिसमें विद्यार्थी अपनी भाषा के विकास और उसे सीखने की जरूरतों का स्वयं ध्यान रखते हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शिक्षकों से स्वयं संपर्क करें और स्थानीय मेजबान समुदाय के लोगों से घुल-मिल कर उनकी सांस्कृतिक तथा भाषाई बारीकियों को समझने का प्रयास करें।''

इंस्टीट्यूट ने ऐसी व्यवस्था की है कि विद्यार्थी जिस भाषा को सीख रहे हैं, वे उसे बोलने वाले लोगों के बीच रह सकें। इसलिए बांग्ला भाषा के विद्यार्थी कोलकाता में, हिंदी के जयपुर में, उर्दू सीखने वाले लखनऊ में और पंजाबी सीखने वाले विद्यार्थी पटियाला में रहेंगे। इंस्टीट्यूट उन्हें मेजबान परिवारों के साथ रहने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। कक्षा में पढ़ाई और शिक्षकों के व्यक्तिगत व्याख्यान के अलावा फिल्म तथा नाटक देखने की भी व्यवस्था की गई है। □